International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.11 No.4 March – April 2024

कुसुमकुमार लिखित "दिल्ली उंचा सुनती है" नाटक में व्यक्त सामाजिक संवेदना

हर्षदा बबन चव्हाण
हिंदी विभाग, के.आर.पी.महाविद्यालय इस्लामपुर जि.सांगली
Corresponding Author - हर्षदा बबन चव्हाण
DOI - 10.5281/zenodo.10939303

शोधसार:

डॉ. कुसुमकुमार ने अपने नाटक "दिल्ली उंचा सुनती है" में मानवी भाव-भावनाओं के साथ सामाजिक संवेदना की सफल अभिव्यक्ती की है। वर्तमान सामाजिक परिस्तिथी में प्रस्तुत नाटक पाठको की सामाजिक संवेदनाओं को जागृत करने में सफल जान पडता है। एक सामान्य सेवानिवृत्त कर्मचारी के जीवन की उल्झनो को प्रस्तुत नाटक में अभिव्यक्ती मिली है। जिसमे उसकी तलाकशुदा बेटी की मानसिक बिमारी,दवाईओं के खर्चे,बेटी की आत्महत्या का बोझ,पेन्शन ना मिलने का दु:ख,आनेवाली मुसिबते शामिल है।

"दिल्ली उंचा सुनती है"नाटक सामाजिक समस्याओं को प्रस्तुत करता है । प्रस्तुत नाटक में दिल्ली शब्द एक व्यवस्था का प्रतिक है । तो 'उंचा सूनना'यह बहरा होना,महत्व न देना,इस अर्थ में प्रयुक्त होता है । एक कुशल नाटककार अपने नाटकों में मानवी भाव भावना के साथ ही सामाजिक परिवेश का भी उद्घाटन करता है ।अपने नाटकों के मध्यम से समाज को सामाजिक संवेदनाओं से परिचित करा देता है । सामाजिक परिस्थितीयां,विकास,पतन,संघर्ष इन सभी संवेदनाओं को वह अपने नाटक के मध्यम से समाज के सामने लाता है प्रस्तुत शोधपत्र में लेखिका कुसुमकुमार के नाटक दिल्ली उंचा सुनती है में व्यक्त सामाजिक संवेदना का विश्लेषण करने का प्रयास किया है,जो आज की सामाजिक परिस्थिती को परिभाषित करती है ।

बीज शब्द – सामाजिक संवेदना ,परिवेश ,उद्घाटन ।

प्रस्तावना:

डॉ. कुसुम कुमारजी ने अपने नाटक "दिल्ली उंचा सुनती है" में तत्कालिक सामाजिक समस्याओं को समाज के सामने लाने का कार्य किया है । भ्रष्टाचार,नौकरशाही तंत्र का डट के विरोध किया है । वह अपने लेखन के बल पर समाज में परिवर्तन देखना चाहती है।समाज की भावनाएँ जागृत कर देती है। उनकी सोई संवेदनाओं को जगा देती है। वह सामाजिक यथार्थ को संवेदना के धरातल पर प्रस्तुत करती है। मनुष्य का जीवन समाज से जुडा है । साहित्यकार भी उसी समाज का हिस्सा है । अत: वह समाज में जो भी देखता है,महसूस

करता है उन अनुभूतीयो को अपने साहित्य में परिवर्तीत करता है I एक सफल नाटककार संवेदना की प्रक्रिया में परिस्थिती को पूर्णरूप से आत्मसात करता है I अपने सूक्ष्म निरीक्षण से नाटक की निव रखता है I संवेदना के बिना साहित्य की निर्मिती नही होती I कुसुमकुमार ऐसी ही एक संवेदनशील लेखिका है I उन्होने अपने नाटको में सामाजिक संवेद्नाओ का उद्घाटन किया है I

प्रस्तुत शोधपत्र में कुसुमकुमार के मौलिक नाटक दिल्ली उंचा सुनती है में व्यक्त संघर्ष,तनाव,मानसिक बिमारी,महत्वाकांक्षा की संवेदनाओं को अभिव्यक्त किया है I

तलाक:

विवाह सोलह संस्कारो में से एक पवित्र संस्कार है I लेकीन आज कल लोग शादीशुदा जीवन की उल्झनो से तंग आकर मुक्त होना चाहते है I पश्चिमी सभ्यता का अनुकरन करते है I तलाक लेते है I बत्रेड रसेल का कहना है की, "तलाक का ध्येय तो कभी नही रहा कि यह एक विवाह पर आधारित परिवार का विकल्प बन जाए बल्की केवल यह रहा है कि, जहा विशेष कारणो से, विवाह का जारी रहना असहनीय हो जाए वहा इसकी अनुमती हो जीससे की कष्ट दूर हो सके I" 1

दिल्ली उंचा सुनती है नाटक में सेवानिवृत्त क्लर्क माधोसिह की बेटी नीति तलाकशुदा है I वह अपने पिता के साथ दिल्ली छोडकर अपने पैतृक गांव आई है I वह हमेशा निराश रहती है I मनोरुग्ण सी लगती है I उसकी उदासी देखकर घरमालीक मगनलाल उससे पुछते है तब कमला उन्हे बताती है,दो साल पहले उसका तलाक हो चुका है I वह हमारे साथ रहती है I हमेशा उदास और खामोश रहती है I उसका इलाज चल रहा है , "कुछ नही है उसे फिर भी उसके इलाज पर घर का सामान छोड सारा रुपया पैसा खर्च हो गयाI "2

इसप्रकार दिल्ली उंचा सुनती है नाटक के मध्यम से लेखिका ने तलाकशुदा स्त्री जीवन की संवेदना को स्पष्ट किया है I

मानसिक बिमारी:

सामाजिक परिस्थिती का शिकार हुआ सामान्य इन्सान हर वक्त उदास रहता है I अपने विचरो में खोया रहता है I खुद से बाते करता है I अपने जीवन के प्रती उदास रहता है I असामान्य सा बर्ताव करता है I

दिल्ली उंचा सुनती है नाटक में नीति को मानसिक बिमार दिखाया गया है I वह अपने माता पिता के साथ अपने पैतृक गांव में रहती है I तलाकशूदा होने के कारण वह हमेशा सोच में डुबी रहती है I उसकी तबियत भी ठीक नही रहती I उसके माता पिता हमेशा उसकी ख़ुशी के लिए प्रयास करते है I उसकी दवाई में रुपये खर्च हो जाते है I उसके पिता को पिछले छ: महिनो से पेन्शन नही मिली है I इसलिए वह बार-बार दिल्ली जाते है। पर हर जगह पैसों के सिवा काम नहीं बनता। सरकारी तंत्र और नौकरशाही की वजह से उन्हें हार माननी पडती है। इसी विचारों में वह हरदम खोई रहती है, और मानसिक बिमार बन जाती है। इस नाटक में

लेखीका ने मानसिक बिमारी का प्रश्न संवेदन- शील होकर सामने रखा है।

सेवानिवृत्त व्यक्ती की संवेदना:

दिल्ली ऊँचा सुनती है नाटक के प्रमुख पात्र माधोसिंह वित्त मंत्रालय में छत्तीस साल कलर्क का काम करते हुए रिटायर्ड हो चुके है। छ:ह महीने से पेन्शन न मिलने के कारण पत्नी और बेटी के साथ गाँव आ जाते है। दिल्ली में गुजारा करना संभव न था। उन्होंने छह चिट्ठीयाँ भेजी पर जबाब न मिला। वह खुद चले जाते है तब पता चलता है कि, सरकारी दस्तावेज में उनको मृत घोषित कर दिया है। माधोसिंह बिनती करता है कि," जीता जागता आपके सामने खडा हूँ, आप अपने रेकॉर्ड में हुई गलती सुधार लीजिए।"3 तब नोकरशहा प्रमाणित करने को कहते है। माधोसिंह जीवीत होने का प्रमाणपत्र माँगने डॉक्टर के पास चले जाते है। पर वह भी मना कर देते है। अथक परिश्रम के बाद प्रमाणपत्र मिलता है लेकीन उसपर भी नाम गलत होता है। इस तरह से एक के बाद एक मुसीबतें आती रहती है। सेवानिवृत्त होकर भी उन्हें अपनी मेहनत का मेहनताना नहीं मिलता। दर-दर की ठोकरे खानी पडती है।"प्रस्तुत नाटक मध्यमवर्ग के अर्थाभाव,देश में व्याप्त नोकरशाही, लालफिताशाही की बढती रिश्वतखोरी,अधिकारियो की,मंत्रियो की उदासीनता, बढता अमानवीय व्यवहार ,व्यवस्था में सामान्य मनुष्य की होनेवली उपेक्षा आदि का वास्तविक चित्रण करता है । साथ ही नाटक प्रशासनिक आकर्मन्यता के विषय को उठाते हुए सरकरी कार्यालयो में बढती जानेवाली लापरवाही,कर्मचारियो की मनमानी करने की प्रवृत्ती,उत्तरदायित्व हीनता और आम आदमी को मिलने वाली पिडा को भी चित्रित करता है I"4

कुसुमकुमारजी ने सेवानिवृत्त लोगों की संवेदना माधोसिंह के माध्यम से समाज के सामने लाने का प्रयास किया है।

आत्महत्या:

जब कोई व्यक्ती खुद अपना जीवन समाप्त करता है तो उसे आतमहत्या कहते है। समाज का आधारस्तंभ कही जानेवाली आज की युवा पीढी निराशा से घिरकर आत्महत्या करती दिखाई देती है। दिल्ली उंचा सुनती है नाटक में भी युवा पीढी का प्रतिनिधित्व करने वाली नीति निराशा से ग्रस्त है। पिता को पेन्शन मिलने में दिक्कतें आ रही है। कमाई का कोई दूसरा रास्ता नहीं है। उसपर भी नीति की दवाइयों पर खर्चे होते हैं। घर में, चुल्हा भी नहीं जल रहा। पैसों के बिना तो कोई काम नहीं बनता। घर की हालत उससे देखी नहीं जाती। वह कमला से कहती है," मेरे शरीर में बहुत चुस्ती है। मैं बिल्कुल अच्छी हूँ। मुझे कुछ नहीं हुआ--मेरा इलाज बंद कर दो बंद कर दो मेरा इलाज--- मैं भी मैं भी तो जी कर देखू बिना किसी भी... इलाज के - हाँ, बिना किसी इलाज के---"5 एक माधोसिंह और मगनलाल दिल्ली जाते है तब नीति कुछ खा कर आत्महत्या कर लेती है। वह अपने परिवार पर बोझ नहीं बनना चाहती। कुसुमकुमार ने समाज में होनेवाली आत्महत्याऐं और उसके पिछे के कारणों का बहुत

ही बारीकी से निरीक्षण करके अपने नाटकों में उसका उद्घाटन किया है।

परित्यक्ता:

इस नाटक में नीति को परित्यक्ता नारी के रूप में दिखाया गया है। परित्यक्ता का अर्थ है पती द्वारा त्यागी हुई पत्नी। भारत में पुरुषप्रधान संस्कृति है। कई बार पती-पत्नी के बीच की अनबन के कारण पती पत्नी का त्याग कर देता है। तब उसके पास आत्महत्या करना या फिर मायके में जाकर रहना यही पर्याय होते है। वह बेसहारा, निराश बन जाती है। समाज उसको अलग नजरीये से देखता है। नीति परित्यक्ता युवा नारी का प्रतिनिधीत्व करती है। दिशाहीन, निराश बनी युवा पीढ़ी की संवेदना को कुसुमकुमारजी ने सहज रूप से समाजाभिमुख रखा है।

भ्रष्टाचार:

आजकल सब जगह भ्रष्टाचार अपनी जड़े गाड चूका है। कोई भी क्षेत्र इससे वंचीत नहीं रहा चाहे नोकरशहा हो, राजनिती या सरकारी तंत्र सभी जगह इसीका बोलबाला है। दिल्ली उंचा सुनती है नाटक में भी भ्रष्टाचार दिखाया गया है। माधोसिंह को छ: महीने से पेन्शन नहीं मिलती तब वह दिल्ली के कार्यालय में चला जाता है। वहाँ के कर्मचारी भ्रष्ट है। वह सरकारी तनखा लेते है मगर खुद का काम ढंग से नहीं करते 1 कार्यालय में आनेवाले लोगों से रिश्वत की अपेक्षा रखते है। कार्यालय में काम करने वाले मिस्टर ए कहते है, ”यहाँ साला कोई आकर कुछ पेश करे तब ना ! रिश्वत मिलेगी और यहाँ? हु ह भूखे- नंगों का दफ्तर है यह--- सब कानी कौडी के मोहताज साले ---खुद पेन्शन पर गुजर करने वाले! उनसे रिश्वत मिलेगी:"6

प्रस्तुत नाटक के संदर्भ में डॉ.किशोर पवार लिखते है,’’एक साधारण नोकरी करने वाला कर्मचारी सेवानिवृत्ती के उपरांत साधारण जीवन यापन करने को इच्छुक है 1 परंतु हमारी विभिन्न व्यवस्थाए उसे जीवन यापन करने में बाधाए उत्पन्न करती है 1 विशेषत: कार्यालयीन व्यवस्था में रिश्वत के रोग से गतिहीनता आई है 1 कार्यालयीन अव्यवस्था,गैर जिम्मेदारी ,असहकारीता इ.से वह अक्षम बनती है 1 परिणाम स्वरूप जनसाधारण अपने अपेक्षित अधिकार की पेन्शन प्राप्त नही कर पाता1”7

निष्कर्ष:

डॉ. कुसुम कुमारजी ने अलग - अलग विषयों पर आठ नाटक लिखे है। इसमें सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, एवं शैक्षणिक परिस्थितिया मनुष्य की संवेदन को विविधता प्रदान करती है। उनके नाटक सिर्फ मनोरंजन ही नहीं करते वरन सामाज की संवेदनाओं को सबके सामने लाने का कार्य करते है।पाठक के मन में नाटक के प्रमुख पात्र माधोसिंह के प्रती संवेदना जागृत करने में नाटककार सफल लगता है 1 रिटायर्ड होकर भी पेन्शन ना मिलना,दिल्ली में गुजरा असंभव होना,घर में परित्यक्ता बेटी, उपर से मानसिक बिमार,कार्यालयो में भ्रष्ट कर्मचारी,दरख्वास्त ना सुनने वाले मंत्री ऐसी परेशानी में फसा साधारण

इन्सान समाज की संवेदना को हिलाकर रखता है I जिसकी चिख कभी दिल्ली तक नही पहुंच पाती I

संदर्भ सूची:

1. डॉ.विठ्ठलदास सारडा –सातवे दशकोत्तर कहानी में पारिवारिक संबंध पृष्ठ क्र.160
2. डॉ.कुसुमकुमार –दिल्ली उंचा सुनती हैI पृष्ठ क्र. 30
3. वही पृष्ठ क्र. 44
4. हिंदी महिला नाटककार –डॉ.भगवान जाधव पृष्ठ क्र.175
5. डॉ.कुसुमकुमार –दिल्ली उंचा सुनती हैI पृष्ठ क्र.85
6. वही पृष्ठ क्र.33
7. Aayushi International Interdisciplinary Research
8. Journal (AIIRJ) किशोर माणिकराव पवार –दिल्ली उंचा सुनती है
9. व्यवस्थाओं का सत्य पृष्ठ क्र.95 (September 2021)